

रथेन संचरते (nach P. und Vop. in Verb. mit einem instr. stets med.) P. 1, 3, 54, Sch. Vop. 23, 46. को हि मे जीवितेनार्थो विपत्तस्याश्च पतिष्ठाः । पौरः संचरमाणस्य (auf Andern reitend, von Andern getragen) काष्ठलो-
ष्टतधर्मिणः ॥ R. 4, 60, 24. अमिषलं संचरतो घनानाम् bis zum Gürtel der Berge herabsteigend KUMĀRAS. 1, 6. प्राणो हापानो भूवाङ्मुत्येभ्य इति संचरति verbreitet sich von den Fingerspitzen aus ÇAT. Br. 8, 1, 8, 8. 4, 2. — 4) eingehen in, sich verbreiten durch, durchdringen, durchwandern: वृत्ता वनानि सं चर AV. 6, 43, 1. 8, 9, 12. समानजन्मा क्रतुरस्ति वः शिवः स वः सर्वाः सं चरति प्रज्ञानम् 22. दिशः 13, 2, 41. MBh. 3, 12923. R. 1, 47, 6. उभौ लोकि ÇAT. Br. 14, 7, 1, 7. MBh. 3, 8411. 12717. med. 2, 271. 13, 7415. यस्तु पृथिवीं संचरिष्यति 3, 8258. नगम् R. 6, 83, 20. इमानि लो-
कद्वाराणि यो वै संचरते सदा MBh. 2, 2038. 3, 925. — 5) sich bewegen, sich aufhalten, sich befinden: अत्रेण वै योनिं गर्भः संचरति ÇAT. Br. 3, 1, 2, 28. उत्तरेणाग्नीध्रियं संचरेत् 3, 6, 2, 20. 1, 1, 2, 21. 9, 2, 4. 12, 4, 2, 2. med.: पश्चिमेन वेदिं संचरेत् LĪTJ. 5, 6, 3. ÇĀṆKH. Çr. 2, 8, 2. वैराग्ये संचरत्येको नीतौ भ्रामति चापरः leben BHARTṚ. 1, 89. — 6) übergehen auf (gen.): त-
त्तव भर्तुः सक्तो ऽपमृत्युस्तस्य संचरति PAṆĀT. 186, 24. — 7) üben: तपः समचरन् BHĀG. P. 1, 16, 33. — caus. 1) in Berührung —, in gleiche Rich-
tung bringen: समाजं चारया वृषन् VS. 23, 21. तयो स्तोत्राणि च शस्त्रा-
णि च संचारयेत् ÇAT. Br. 12, 2, 2, 4. ते न पतयोः संचारयेत् LĪTJ. 10, 18, 6. — 2) in Bewegung versetzen: सूत्रसंचारितवाङ्मयां (काष्ठघटितवेतालस्य) HIT. 63, 13. पर्यस्तसंचारितचामरं RAGH. 18, 42. किम् — शार्ङ्गवातान्संचारयामि नलिनीदलतालवृत्तैः ÇĀK. 69. संचारिते चागुरुसारयनौ धूपे RAGH. 6, 8. — 3) gehen lassen: पदातिरपपादत्रः पित्रा संचारितो ऽभवम् RĀGĀ-TAR. 5, 193. यूनानि संचार्य (द्विपेन्द्रः) herumführen ÇĀK. 102. durchwandern las-
sen: धर्मं चतुष्पादं मनवः — संचारयत्यद्वा स्वे स्वे काले महीम् BHĀG. P. 8, 14, 5. — 4) übertragen, übergeben: संचारयामास जरां तदा पुत्रे MBh. 1, 3169. — Vgl. संचर, संचार u. s. w.

— अनुसम् 1) nachfolgen, entlang gehen; besuchen TS. 1, 5, 20, 14. पृथिवीम् AV. 19, 58, 3. पन्थाम् 18, 3, 4. पथ्याम् AIT. Br. 1, 7. पुण्यानि ती-
र्थानि नदीप्रस्रवणानि MBh. 12, 7002. — 2) zugehen auf, zustreben: स-
मानं योनिमनु सं चरेति AV. 8, 9, 12. RV. 3, 33, 4. 10, 17, 1. स एतामृतिमनु
समचरयद्देवोः सुषिरम् TS. 5, 1, 2, 4. वाताग्रम् 1, 7, 2, 2. — 3) sich verbrei-
ten durch Etwas hin, — bis zu, durchdringen; durchwandern: रोहि-
तो रश्मिभिर्भूमिं समुद्रमनु सं चरत् AV. 13, 2, 40. प्राणः सर्वाण्यङ्गान्यनु सं-
चरति ÇAT. Br. 1, 3, 2, 3. 13, 7, 2, 22. (पुरुषः) कस्य कामाय शरीरमनु संच-
रेत् 14, 7, 2, 16. 2, 3, 2, 3. die Sonne इमां लोकास्तत्त्वमिवानुसंचरति 14, 2, 2, 22. ये (सर्पाः) दिवं देवीमनुसंचरति TBa. 3, 1, 4, 7. इमां लोकां कामात्री
कामद्वयानुसंचरन् TAITT. Up. 3, 10, 5. उभौ लोकि BHĀ. Ār. Up. 4, 3, 7. दे-
शाननुसंचरामो वनानि च कृच्छ्राणि MBh. 3, 1366. पृथिवीमन्वसंचरत् (mit
versetztem Augment) 1, 5515. यया महामत्स्य उभे कूले अनुसंचरति von
einem Ufer zum andern reicht ÇAT. Br. 2, 7, 1, 18. — 4) übergehen in: सू-
र्यस्य रश्मिन् याः संचरन्ति मरीचिर्वा या अनुसंचरन्ति AV. 4, 38, 5. (अग्रयः)
ये विद्युतमनुसंचरन्ति 3, 21, 7. — 5) herumirren: पृथिव्यामनुसंचरन्ति MBh.
1, 3606. — caus. übergehen in, werden zu: तौश्चानुसंचार्य (तान् d. i. देवान्)
MBh. 12, 11208.

— अभिसम् zugehen auf, aufsuchen: समानं वृत्तमभि संचरन्ती RV. 1, 146, 3. 8, 48, 1. यं त्वा जनांसो अभि संचरन्ति गाव उल्लमिव व्रजम् 10, 4, 2.

त इन्निष्यं हृदयस्य प्रकृतैः सृक्षवत्क्षमभि सं चरन्ति 7, 33, 9. — Vgl. अ-
भिसंचारिन्.

— उपसम् 1) betreten: शालाम् AV. 3, 12, 1. — 2) sich geschlechtlich
verbinden: प्रमदा पीत्वा भर्तारमुपसंचरेत् VARĀH. BRH. S. 77, 26.

— प्रतिसम् zusammentreffen: आचते ऽहं मानुषेभ्यो देवेभ्यः प्रतिसंच-
रन् MBh. 12, 11022.

चर (von चर) 1) adj. f. ई gaṇa पचादि zu P. 3, 1, 134. Vop. 26, 30. a)
beweglich; subst. das Bewegliche (das Thier im Gegens. zur Pflanze)
AK. 3, 2, 23. 3, 6, 5, 1. H. 1434. an. 2, 415 (= व्रजम् und चल). MED. r.
30 (= व्रस und चल). VS. Prāt. 6, 28. MBh. 5, 1786. सैनिका यवनाश्चाराः
(BURNOUR: les Y. qui forment son armée et sa suite, also = सृक्षर) BHĀG.
P. 4, 29, 23. लोकस्य स्यावरस्य चरस्य च ÇVETĀÇV. Up. 3, 18. भूतानि स्था-
वराणि चराणि च M. 7, 15. MBh. 1, 1859. 13, 3760. TATTVAS. 24, 45. चर-
स्थिराणि सुÇr. 2, 187, 20. BHĀG. P. 3, 31, 16. 32, 12. 6, 16, 43. अगतसर्वं चरं
स्थाणु M. 3, 201. Gegens. ध्रुव BHĀG. P. 5, 3, 26. चरणामन्त्रमचराः M. 3,
29. MBh. 5, 3670. 7, 2607. 13, 3708. BHĀG. 13, 15. BHĀG. P. 4, 18, 24. —
b) am Ende eines comp. a) gehend, wandelnd, sich aufhaltend, lebend
(an einem best. Orte, in einer best. Richtung, zu einer best. Zeit, in einer
best. Weise), nachgehend P. 3, 2, 16. Vop. 26, 46. अत्ररित्तचराः (कृपाः)
R. 3, 9, 10. प्राणिषु — धर्माण्यचरेषु ÇĀK. 106. प्रदत्तिष्वचरा ग्रहाः VARĀH.
BRH. S. 21, 17. प्रतिलोममाडलं 43, 17. Vgl. अग्रश्चर, अन्तः, अग्रं, आ-
दायं, उदके, उपरि, एक, काम, तपा, तमा, तुदं, खं, खे, गगनं,
गगणं, गिरि, गोषु, जलं, जले, दिवा, दूर, नक्तं, निशा, पारं,
भू, रजनि, रजनी, वन, वने, सह, सेना. — ß) ühend, vollziehend: व-
क्रत्रतं M. 4, 196. — γ) parox. (als Suffix betrachtet) = भूतपूर्व früher ge-
wesen P. 5, 3, 53. 54. 6, 3, 35. आद्यं, f. ई der früher reich gewesen ist, दे-
वदत्तं früher im Besitz des D. gewesen Sch. Vop. 7, 66. — 8) अचर nicht
gehbar, nicht wandelbar: सर्वप्राण्यचरे पथि HARIV. 12302. — 2) m. a)
Späher, Kundschafter (vgl. चार) AK. 2, 8, 1, 13. 3, 4, 40, 102. H. 733. H.
an. MED. M. 7, 122. आभ्यन्तराश्च बाह्याश्च व्यादिश्यन्तां चरा नृप HA-
RIV. 10316. R. 4, 1, 7. 5, 29, 26. 41, 10. 6, 1, 20. 29. HIT. 92, 22. VARĀH.
BRH. S. 10, 10. 16, 36. — b) Bachstelze ÇĀBAM. im ÇKDR. — c) eine best.
kleine Muschel, Cypraea moneta (s. कपर्द) RĀGĀ. im ÇKDR. — d) eine
Art Würfelspiel H. an. MED. — e) der Planet Mars MED. — Die 6te
(the seventh Karana) und 7te (the Karanas collectively) Bed. bei WIL-
SON ist wohl daraus zu erklären, dass 7 Karana (s. u. 2. कर्ण 2, m) अ-
ध्रुव oder चर d. i. beweglich genannt werden. — 3) f. चरी eine junge
Frau H. 511.

चरक (wie eben) 1) m. U. 2, 33. a) Wanderer, ein herumziehender
Brahmanenschüler: मन्त्रेषु चरकाः पर्यत्रनाम ÇAT. Br. 14, 6, 2, 1. P. 5, 1, 11.
Ind. St. 2, 287. N. 2. अन्यतोर्विक्रमणान्नाक्षरकपरिव्राजकानाम् LA-
LIT. ed. Calc. 2, 20. — b) Späher UNĀDik. im ÇKDR. — c) pl. Name einer
Schule des schwarzen Jaṅgus, deren Gebräuche von den im ÇAT. Br. ge-
lehrten in manchen Einzelheiten abweichen, ÇAT. Br. 4, 1, 2, 19. 2, 4,
1. 10. HARIV. zu 13, 2, 3. द्वे सौत्रामण्यौ कैकिली चरकसौत्रामणी च
LĪTJ. 5, 4, 20. MAh. zu VS. 10, 31. Ind. St. 3, 236. fgg. चरकाचार्य VS. 30.
18. चरकाधर्यु ÇAT. Br. 3, 8, 2, 24 (die an dieser St. angegebene Abwei-
chung der K. wird von TS. 6, 3, 9, 6. 10, 2 vertreten). 4, 2, 2, 15. 8, 1, 3, 7.